

**ORIGINAL TEXT**

## मौत से ठन गई

- अटल बिहारी वाजपेयी

ठन गई!

मौत से ठन गई!

जूझने का मेरा इरादा न था,  
मोड़ पर मिलेंगे इसका वादा न था  
रास्ता रोक कर वह खड़ी हो गई,  
यों लगा ज़िंदगी से बड़ी हो गई  
मौत की उमर क्या है? दो पल भी नहीं,  
ज़िंदगी-सिलसिला, आज-कल की नहीं  
मैं जी भर जिया, मैं मन से मरूँ,  
लौटकर आऊँगा, कूच से क्यों डरूँ?  
तू दबे पाँव, चोरी-छिपे से न आ,  
सामने वार कर फिर मुझे आज़मा  
मौत से बेख़बर, ज़िंदगी का सफ़र,  
शाम हर सुरमई, रात बंसी का स्वर  
बात ऐसी नहीं कि कोई ग़म ही नहीं,  
दर्द अपने-पराए कुछ कम भी नहीं  
प्यार इतना परायों से मुझको मिला,  
न अपनों से बाक़ी है कोई गिला  
हर चुनौती से दो हाथ मैंने किए,  
आँधियों में जलाए हैं बुझते दिए  
आज झकझोरता तेज़ तूफ़ान है,  
नाव भँवरों की बाँहों में मेहमान है  
पार पाने का क़ायम मगर हौसला,

देख तेवर तूफ़ाँ का, तेवरी तन गई,  
मौत से ठन गई।

**Dogri Translation:**

## मौत नै छिड़ी गई

(अनुवादक- हीना चौधरी, *Ph.D Scholar, Department of Dogri University of Jammu*)

धड़कने दा मेरा इरादा नेहा  
मोड़'र मिलगे एह वादा नेहा  
रस्ता रोकियै ओह खड़ोई गई  
बझोआ जिंदगी शा मती मठोई गई  
मौती दी उमर केह? दो पल बी नेई  
जिंदगी सिलसिला, अज्ज कल दा नेई  
में रज्जियै जिया, में मनै नै मरां  
परतियै औंड, कूच शा की डरां  
तू पुल्लें पैरें, चोरी छप्पै निं आ  
सामने वार कर फही मिगी अजमा  
मौती शा बेखबर, जिंदगी दा सफर  
हर संज सुरमेई, रात बंझली दा सुर  
गल्ल ऐसी नेई जे कोई दुख गै नेई  
दर्द अपने-बगान्ने दनां घट्ट बी नेई  
प्यार इन्ना मिगी बगान्ने शा थोआ  
ना अपने नै कोई गिला बी होआ  
हर चनौती नै दो हत्य में कीते सदा  
न्हेरियें च बाले न बुझदे दिये सदा  
अज्ज झंझोड़ादा तेज तूफान ऐ  
मछुआ भौड़े दी बाहीं च मेहमान ऐ  
पार पाने दा कायम मगर हौसला

दिक्खी तेवर तूफान दे, तेवरी अड़ी गई  
मौत नै छिड़ी गई।  
मौत नै छिड़ी गई।

**English Translation:**                      **A Battle with Death**

Death has been challenged!  
Death has been challenged!  
I had no intention of fighting,  
No promise was made to meet at the turn.  
She stood blocking the path,  
Suddenly seeming greater than life itself.  
What is the age of death? Not even two moments,  
Life is an endless chain, not merely of today and tomorrow.  
I have lived life to the fullest,  
Why should I accept death willingly?  
I shall return again — why fear the grave?  
Come not on silent feet, not stealthily in hiding,  
Strike from the front, then put me to the test.  
Carefree of death, this journey of life,  
Every evening painted warrior-like, every night the melody of the flute in rebellion.  
It's not that there is no sorrow at all,  
The pain of near and dear is never any less.  
So much love came to me from strangers,  
Yet no complaint remains against my own.  
Every challenge I have faced with both hands wide open,  
In raging storms, the lamps have been kept burning.  
Today a fierce storm shakes everything,  
The boat is a guest in the arms of whirlpools.  
The resolve to reach the other shore still stands firm,  
But seeing the fury of the storm, even courage has stiffened